सामाजिक विज्ञान-2014 (द्वितीय पाली)

Time : 2 Hour 45 Minutes] **[Full Marks : 80**

परीक्षार्थी के लिये निर्देश : देखें प्रथम पाली।

GROUP-A इतिहास (अंक : 20)

निम्नांकित बहुविकल्पीय प्रश्नों में से सही विकल्प चुनें :

1. गैलीबाल्डी पेशे से क्या था ? 1

   (क) सिपाही (ख) किसान

   (ग) जमींदार (घ) नाविक

2. 'वार एण्ड पीस' पुस्तक की रचना किसने की ? 1

   (क) कार्ल मार्क्स (ख) टालस्टाय

   (ग) दोस्तोवस्की (घ) ऐंजल्स

3. सही शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति करें :

   नई आर्थिक नीति.....ई. में लागू हुआ था। 1

4. सही शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति करें :

   सेडोवा का युद्ध.....और.....के बीच हुआ था। 1

5. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 अथवा 60 शब्दों में दें।

   असहयोग आन्दोलन प्रथम जन-आन्दोलन था। कैसे ? 3

6. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 अथवा 60 शब्दों में दें।

   छापाखाना यूरोप कैसे पहुँचा ? 3

http://www.bsebstudy.com

http://www.bsebstudy.com

PTO....

निम्न प्रश्न का उत्तर 50 अथवा 60 शब्दों में दें।

7. स्लम पद्धति की शुरूआत कैसे हुई ? 3

निम्न प्रश्न का उत्तर 100 अथवा 120 शब्दों में दें।

8. जर्मनी के एकीकरण में बिस्मार्क की भूमिका का वर्णन करें। 7

अथवा, यूनानी स्वतंत्रता आन्दोलन का संक्षिप्त विवरण दें।

GROUP–B भूगोल (अंक : 20)

निम्नांकित बहुविकल्पीय प्रश्नों में से सही विकल्प चुनें :

9. सौर ऊर्जा निम्नलिखित में से कौन-सा साधन है ? 1

(क) मानवकृत (ख) पुनःपूर्तियोग्य

(ग) अजैव (घ) अचक्रीय

10. वृहद क्षेत्र में जल की उपस्थिति के कारण ही पृथ्वी को कहते हैं ? 1

(क) उजला ग्रह (ख) नीला ग्रह

(ग) लाल ग्रह (घ) हरा ग्रह

11. सही शब्द से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

(i) मरुस्थलीय मृदा का विस्तार भारत के.....राज्य में होता है। 1

(ii) प्राणियों के शरीर में.....प्रतिशत जल की मात्रा निहित है। 1

(iii) भारत का राष्ट्रीय पक्षी.....है। 1

12. निम्न प्रश्न का उत्तर 20 शब्दों में दें :

वन के पर्यावरणीय महत्व का वर्णन कीजिए। 2

13. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 अथवा 60 शब्दों में दें :

भारत में कितने प्रकार की सड़कें हैं ? वर्णन करें। 3

14. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 अथवा 60 शब्दों में दें :

भारत के लिए जलमार्ग का क्या महत्व है ? 3

15. निम्न प्रश्न का उत्तर 100 अथवा 120 शब्दों में दें :

"कृषि बिहार की अर्थ-व्यवस्था की रीढ़ है।" इस कथन की व्याख्या कीजिए। 7

अथवा, पूरे पृष्ठ पर भारत का एक रेखा मानचित्र बनाइए तथा निम्नलिखित को छायांकित कर नाम अंकित कीजिए :

(क) कोलकाता (ख) काली मिट्टी का क्षेत्र

(ग) सुन्दरवन (घ) बंगाल की खाड़ी

(ङ) मुम्बई।

अथवा, केवल नेत्रहीन छात्रों के लिए :

भारत में बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना से आप क्या समझते हैं ? इससे क्या-क्या लाभ होते हैं ?

GROUP–C राजनीति विज्ञान (अंक : 17)

निम्नांकित बहुविकल्पीय प्रश्नों में से सही विकल्प चुनें :

16. भारत में किस तरह के लोकतंत्र की व्यवस्था की गई है ? 1

(क) प्रत्यक्ष (ख) अप्रत्यक्ष

(ग) प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

17. निम्नलिखित में से कौन राष्ट्रीय दल नहीं है ? 1

(क) राष्ट्रीय जनता दल (ख) बहुजन समाज पार्टी

(ग) लोक जनशक्ति पार्टी (घ) भारतीय जनता दल

http://www.bsebstudy.com
http://www.bsebstudy.com

18. निम्न प्रश्न का उत्तर 20 शब्दों में दें :
सूचना का अधिकार कानून लोकतंत्र का रखवाला है। कैसे ?

19. निम्न प्रश्न का उत्तर 100 अथवा 120 शब्दों में दें। 2
लोकतंत्र किस प्रकार आर्थिक संवृद्धि एवं विकास में सहायक बनता है ?
अथवा, क्या आतंकवाद लोकतंत्र की चुनौती है ? स्पष्ट करें। 6

20. निम्न प्रश्न का उत्तर 20 शब्दों में दें :
राजनीतिक दल की परिभाषा दें। 2

21. निम्न प्रश्न का उत्तर 100 अथवा 120 शब्दों में दें :
गठबन्धन की सरकारों में सत्ता में साझेदार कौन-कौन होते हैं ? 5

GROUP–D अर्थशास्त्र (अंक : 17)

निम्नांकित बहुविकल्पीय प्रश्नों में सही विकल्प चुनें :

22. वैश्वीकरण के मुख्य अंग कितने हैं ? 1
(क) एक (ख) दो (ग) पाँच (घ) चार

23. भारत उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम की घोषणा कब हुई ? 1
(क) 1986 (ख) 1980 (ग) 1987 (घ) 1988

24. निम्न प्रश्न का उत्तर 20 शब्दों में दें।
सहकारिता से आप क्या समझते हैं ? 2

25. निम्न प्रश्न का उत्तर 100 अथवा 120 शब्दों में दें।
भारत में वैश्वीकरण के पक्ष में तर्क दें। 6
अथवा, 'मानवाधिकार' के महत्व पर लिखें।

26. निम्न प्रश्न का उत्तर 20 शब्दों में दें :
वैश्वीकरण से आप क्या समझते हैं ? 2

27. निम्न प्रश्न का उत्तर 100 अथवा 120 शब्दों में दें :
आर्थिक विकास क्या है ? आर्थिक विकास एवं आर्थिक वृद्धि में अंतर बताइए। 5

GROUP–E आपदा प्रबन्धन (अंक : 6)

निम्नांकित बहुविकल्पीय प्रश्नों में सही विकल्प चुनें :

28. सुनामी किस स्थान पर आता है ? 1
(क) स्थल (ख) समुद्र
(ग) आसमान (घ) इनमें से कोई नहीं

29. 26 दिसम्बर, 2004 को विश्व के किस हिस्से में भयंकर सुनामी आया था ? 1
(क) पश्चिम एशिया (ख) प्रशान्त महासागर
(ग) अटलांटिक महासागर (घ) बंगाल की खाड़ी

30. निम्न प्रश्न का उत्तर 50 अथवा 60 शब्दों में दें : 4
भूकम्प के प्रभावों को कम करने वाले किन्हीं चार उपायों को लिखिए।

http://www.bsebstudy.com
http://www.bsebstudy.com

4. आस्ट्रीया और प्रशा।

5. अगस्त 1920 ई. में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन की शुरूआत हुई। इस आंदोलन के मुख्यत: तीन कारण थे—

(i) खिलाफत का मुद्दा— प्रथम विश्वयुद्ध में टर्की ब्रिटेन के हाथों हार चुका था। ओटोमन साम्राज्य के शासक (खलिफा) को तुर्की के सुल्तान की सत्ता से वंचित कर दिया गया। इससे अंग्रेजों के प्रति भारतीय मुलसमानों में काफी असंतोष पैदा हुआ। गाँधी जी की अध्यक्षता में अखिल भारतीय खिलाफत कमिटी का गठन किया गया। गाँधी ने हिंदू-मुस्लिम एकता के अवसर के रूप में इस आंदोलन को महत्व दिया।

(ii) पंजाब में ब्रिटिश बर्बरता के विरुद्ध— रोलेट एक्ट तथा स्थानीय नेता डॉ. सत्यपाल और डॉ. किचलू के गिरफ्तारी के विरोध में जब 13 अप्रैल 1919 ई. को जालियाँवाला बाग में सभा चल रही थी तब जनरल डायर की नृशंस कारवाई से पंजाब के लोगों के बीच में फैले असंतोष को दबाने के लिए पंजाब में मार्शल लौ लगाकर आतंक फैलाया गया। गाँधी जी ने पंजाब के अत्याचारी पदाधिकारियों को सजा दिलवाने हेतु यह आंदोलन शुरू किया।

(iii) स्वराज्य प्राप्ति करना— प्रथम विश्वयुद्ध में इंग्लैंड अपनी जीत के बावजूद भारतीयों को एक जिम्मेवार सरकार की स्थापना के वायदे से मुकर गया। इतना ही नहीं सरकार की नीतियाँ काफी कठोर एवं हिंसक हो गई। ऐसी स्थिति में गाँधी जी को स्वराज्य प्राप्ति हेतु आंदोलन करना आवश्यक हो गया।

अत: असहयोग आंदोलन प्रथम जन आंदोलन था।

6. मुद्रण कला के आविष्कार और विकास का श्रेय चीन को जाता है। यद्यपि मूवेबल टाइपों द्वारा मुद्रण कला का आविष्कार तो पूरब में ही हुआ, परंतु इस कला का विकास यूरोप में अधिक हुआ। लकड़ी के ब्लॉक द्वारा होनेवाली मुद्रण का समरकन्द-पर्शिया-सिरिया मार्ग (रेशम मार्ग) से व्यापारियों द्वारा यूरोप, सर्वप्रथम रोम में प्रविष्ट हुआ। 13वीं सदी के अंतिम में रोमन मिशनरी एवं मार्कोपोलो द्वारा ब्लॉक प्रिंटिंग के नमूने यूरोप पहुँचे। वहाँ इस कला का प्रयोग ताश खेलने एवं धार्मिक चित्र छापने के लिए किया गया। रोमन लिपि में अक्षरों की संख्या कम होने के कारण लकड़ी तथा धातु के बने मूवेबल टाइपों का प्रसार तेजी से हुआ। इसी बीच कागज बनाने की कला 11वीं ससदी में पूरब से यूरोप पहुँची तथा 1336 ई. में प्रथम पेपर मिल की स्थापना जर्मनी में हुई। छापाखाना का आविष्कार जर्मनी के गुन्टेन्वर्ग ने 1450 ई. में किया।

7. कारखाना में काम करने वाले मजदूर अपनी कम मजदूरी के कारण शहर के गंदे एवं जीवन संबंधी सुविधाओं से वंचित इलाकों में रहने, प्रदूषित वातावरण में जीने एवं गंदा पानी पीने के लिए बाध्य हो जाते हैं। इस प्रकार शहर के अनुपयुक्त हिस्सों में बसने, जीवन जीने एवं पुराने जर्जर मकानों में रहने वाले मजदूरों के क्षेत्र को स्लम एरिया कहा जाता है। और किसी भी प्रकार जीवन जीने की बाध्यता के कारण स्लम पद्धति की शुरूआत हुई।

8. बिस्मार्क 19वीं शताब्दी के इतिहास का एक महान कूटनीतिज्ञ, दूरदृष्टि वाला राजनेता एवं राजतंत्रवादी विचारों का संवाहक था। प्रशा का चांसलर बनने के बाद बिस्मार्क का मुख्य उद्देश्य प्रशा को शक्तिशाली बनाकर, जर्मनसंघ में ऑस्ट्रिया के प्रभाव को समाप्त कर प्रशा के नेतृत्व में जमर्ध्नी के एकीकरण को साकार करना था। अपने इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए बिस्मार्क ने अनेक आंतरिक तथा बाह्य कठिनाइयों का सामना करते हुए लक्ष्य की तरफ आगे बढ़ा। बिस्मार्क जर्मनी के एकीकरण के लिए सैन्य शक्ति के महत्व को समझता था। इसलिए उसने प्रशा में अनिवार्य सैन्य सेवा लागू किया।

प्रशा को सर्वश्रेष्ठ सैनिक शक्ति बनाकर उसने कूटनीतिक आधार प्राप्त करने के लिए रूस, फ्रांस और इटली से मित्रता कर ऐसी अंतर्राष्ट्रीय स्थिति बना ली कि ऑस्ट्रिया के साथ प्रशा का युद्ध होने पर कोई भी पड़ोसी राष्ट्र ऑस्ट्रिया की सहायता न कर सके।

http://www.bsebstudy.com
http://www.bsebstudy.com

बिस्मार्क ने अपनी सैन्य एवं कूटनीतिक तैयारी के उपरांत अगले तीन युद्धों के द्वारा जर्मनी के एकीकरण का कार्य पूरा किया।

• **डेनमार्क के साथ युद्ध**—1864 ई. में श्लेशविग और हॉलेस्त्रीन राज्यों के मुद्दे पर बिस्मार्क ने ऑस्ट्रिया के साथ मिलकर डेनमार्क को पराजित किया। इस जीत के बाद श्लेशविक प्रशा को और हॉलस्टीन ऑस्ट्रिया को मिला। हॉलस्टीन की अधिकांश जनता जर्मन थी तथा वह क्षेत्र ऑस्ट्रिया से दूर तथा प्रशा के निकट था। यह उपलब्धि बिस्मार्क की कूटनीति का कमाल था।

• **ऑस्ट्रिया से युद्ध**—बिस्मार्क ऑस्ट्रिया— प्रशा युद्ध को जमर्ध्नी के एकीकरण के लिए अनिवार्य मानता था। इस परिस्थिति से निपटने के लिए बिस्मार्क ने युद्ध के समय फ्रांस को तटस्थ रहने एवं इटली को ऑस्ट्रिया के क्षेत्रों पर आक्रमण करने के लिए तैयार कर लिया। 1866 ई. में प्रशा ऑस्ट्रिया के बीच जब सेडेवा का युद्ध हुआ तो बिस्मार्क के कूटनीतिज्ञ सँधियों के फलस्वरूप दोनों तरफ से युद्ध में फंस कर ऑस्ट्रिया बुरी तरह पराजित हुआ। जिसके फलस्वरूप जर्मन क्षेत्रों से ऑस्ट्रिया का प्रभाव समाप्त हो गया।

• **फ्रांस के साथ युद्ध**—जर्मनी के एकीकरण को पूरा करने के लिए फ्रांस के साथ प्रशा का युद्ध अनिवार्य था। स्पेन के उत्तराधिकार के मामले पर 1870 ई. में प्रशा फ्रांस युद्ध शुरू हुआ। सावधान प्रशा ने असावधान फ्रांस को बुरी तरह पराजित किया। इस प्रकार एक महाशक्ति के रूप में जर्मनी का उदय यूरोप की राजनीतिक मानचित्र पर हुआ।

जर्मनी का एकीकरण वस्तुत: बिस्मार्क की राजनैतिक दूरदृष्टि, कूटनीतिक विलक्षणता एवं उसकी रक्त और लौह की नीति का सार्थक परिणाम था।

अथवा, यूनान का इतिहास काफी गौरवमय रहा है जिसकी सांस्कृतिक चेतना न केवल यूरोप को बल्कि सारे विश्व को अनुप्राणित करती रही है। 15वीं शताब्दी में ऑटोमन साम्राज्य ने इस पर अधिकार कर उसे अपने साम्राज्य में आत्मसात करने का प्रयास किया। इसकी प्रतिक्रिया में यूनानियों के बीच राष्ट्रीय भावना का विकास हुआ जिसके फलस्वरूप यूनानी स्वतंत्रता संग्राम की शुरूआत हुई।

यूनानी स्वतंत्रता संग्राम के कारण—

1. 18वीं शताब्दी से ऑटोमन साम्राज्य की स्थिति काफी कमजोर हो गई। इसका लाभ उठाकर यूनान के राष्ट्रवादी तत्व स्वतंत्र होने हेतु प्रयासरत हो गए।

2. यूनानी ग्रीक ऑर्थोडाक्स चर्च के अनुयायी थे। समान धार्मिक भावना के कारण उनमें जातीय एकता की अनुभूति थी।

3. 18वीं सदी के अंत में यूनान में बौद्धिक जागरण हुआ। कोरेइंस यूनानियों में राष्ट्र प्रेम की भावना जगाई। कंस्टेटाइन रीगास ने गुप्त समाचार पत्रों का प्रकाशन कर यूनानियों में तुर्की से स्वतंत्र होने की भावना प्रज्वलित की। इसी समय इटली के समान यूनान में गुप्त क्रांतिकारी समितियाँ गठित की गई जिनका मुख्य उद्देश्य बालकन क्षेत्र से तुर्कों का प्रभाव समाप्त करना था। यूनानियों की आर्थिक स्थिति काफी मजबूत थी। वे धार्मिक रूप से स्वतंत्र थे और प्रशासन में उन्हें उच्च पद प्राप्त था। ऐसी स्थिति में उनमें राष्ट्रीयता की भावनाब लवती हुई। इसके साथ ही यूनान में शक्तिशाली शिक्षित मध्यम वर्ग का उदय हुआ जो साम्राज्यवादी नीतियों का कड़ा विरोधी था। लॉर्ड बायरन की यूनानी स्वतंत्रता संग्राम में हुई शहादत ने जहाँ यूनानियों में एक नया जोश पैदा किया वहीं संपूर्ण यूरोप की सहानुभूति यूनान के प्रति बढ़ी। इन सभी कारणों ने यूनानी स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि तैयार की।

परिणाम :

1. स्वतंत्रता संग्राम के परिणामस्वरूप 1832 ई. में कुस्तुनतुनिया की सँधि की गई जिसके तहत यूनान को स्वतंत्र एवं संप्रभु राष्ट्र के रूप में घोषित किया गया।

2. यूनान की स्वतंत्रता की घोषणा से मेटरनिक को गहरा झटका लगा।

http://www.bsebstudy.com
http://www.bsebstudy.com

3. यूनानी स्वतंत्रता ने बाल्कन क्षेत्र के अन्य ईसाई राज्यों में भी राष्ट्रवादी आंदोलन आरंभ करने की प्रेरणा दी।

GROUP–B भूगोल (अंक : 20)

9. (ख), **10.** (ख)।

11. (i) राजस्थान, (ii) 65%, (iii) मोर।

12. प्राचीन ग्रंथों में भी पेड़ों को देवतातुल्य महत्व दिया गया है। आज विश्व के सभी पर्यावरणविद महसूस करते हैं कि वन के विस्तार पर ही मनुष्य, जीव जंतु एवं संतुलित पर्यावरण संभव है क्योंकि वन के कारण ही वर्षा होती है और मिट्टी का अपरदन रुकता है वायुमंडील ताप नियंत्रित रहता है। जीवनदायी गैस ऑक्सीजन वन के कारण ही वायुमंडल में संतुलित मात्रा में विद्यमान रहता है। कार्बन डाईऑक्साइड जैसे ऊष्मापोषी गैस वन के पेड़ प्रकाश संश्लेषण के तहत भोजन के रूप में इस्तेमाल कर पृथ्वी पर जीवन तत्व को बनाए रखने में सार्थक सिद्ध होता है।

13. स्वतंत्रता के बाद भारत में आर्थिक विकास को गति देने के लिए एवं लोक जीवन को सुव्यवस्थित करने के लिए विभिन्न प्रकार की सड़कें बनाइ गई जिनमें राष्ट्रीय राजमार्ग, राज्य मार्ग, जिले की सड़कें और गाँव की सड़कें महत्वपूर्ण हैं। हाल के वर्षों में एक्सप्रेस राष्ट्रीय महामार्ग भी प्रारंभ किया गया है जो निम्नलिखित हैं—

(i) एक्सप्रेस राष्ट्रीय महामार्ग—देश में आवागमन के संसाधन को तीव्रतर बनाने के लिए एक्सप्रेस राष्ट्रीय महामार्गों की योजना बनाई गई है। ऐसे महामार्ग चार से छह लेन तक होते हैं। 1999 से 2007 की अवधि के बीच 14,846 किलोमीष्टर राष्ट्रीय महामार्ग बनाए जाने की योजना थी। एक एक्सप्रेस राष्ट्रीय महामार्ग दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता को मिलाएगा, तो दूसरा महामार्ग श्रीनगर को कन्याकुमारी से, तीसरा सिलचर को पोरबंदर से, और चौथा एक्सप्रेस राष्ट्रीय महामार्ग देश के बड़े पत्तनों को आपस में मिलाएगा।

(ii) राष्ट्रीय राजमार्ग—यह राष्ट्रीय महत्व की सड़कें होती हैं जो विभिन्न राज्यों की राजधानियों को आपस में मिलाती हैं। इनकी कुल लंबाई 52,000 किलोमीटर है।

(iii) राज्य मार्ग—ये मार्ग प्रत्येक राज्य की राजधानी को उस राज्य के विभिन्न जिलों एवं नगरों से मिलाते हैं। इसका रख-रखाव राज्य सरकार के द्वारा होता है।

(iv) जिले की सड़कें—ये सड़कें जिला मुख्यालय को जिला के अन्य नगरों एवं कस्बों से जोड़ती हैं।

(v) गाँव की सड़कें—ये सड़कें गाँव को जिलों के विभिन्न नगरों से मिलाती हैं।

इसके अलावे सीमा सड़कें सुरक्षा एवं आर्थिक यातायात की महत्वपूर्ण सड़कें होती हैं। इनका निर्माण देश के सीमावर्ती क्षेत्रों में किया जाता है, जिसका रख-रखाव केंद्र सरकार करती है। इस सड़क के निर्माण हेतु केंद्रीय सरकार ने सीमा सड़क विकास बोर्ड का गठन कर रखा है जो सड़कों की मरम्मत, देख-रेख एवं निर्माण कार्य करता है।

14. भारत के लिए जलमार्ग का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। जलमार्ग से कच्चे माल की ढुलाई, परिवहन सस्ते दर पर हो पाता है। अन्य सड़कों, (मार्गों) की अपेक्षा इसके किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नही होती है तथा समान समय से सुरक्षित स्थान पर पहुँच जाता है।

भारत में पाँच प्रमुख जलमार्ग हैं—

1. राष्ट्रीय जलमार्ग–I—यह जलमार्ग इलाहाबाद से हल्दिया के बीच गंगा नदी में 1620 किलोमीटर की लंबाई वाला जलमार्ग है।

2. राष्ट्रीय जलमार्ग–II—ब्रह्मपुत्र नदी से यह जलमार्ग सदिया से घुबरी तक 851 किलोमीटर की लंबाई वाला मार्ग है।

3. राष्ट्रीय जलमार्ग–III—चपकका एवं उद्योमंडल नहरों सहित पश्चिमी तट पर काम्मान से कोट्टयपुरम के बीच दो सौ पांच किलोमीटर की लंबाई में विकसित है।

http://www.bsebstudy.com
http://www.bsebstudy.com

4. राष्ट्रीय जलमार्ग–IV— गोदावरी एवं कृष्णा नदियों के सहारे 1095 किलोमीटर की लंबाई में विकसित है।

5. राष्ट्रीय जलमार्ग–V— ब्राह्मणी और महानदी डेल्टा के सहारे 623 किलोमीटर की लंबाई में विकसित की जा रही है।

15. बिहार के 72% से अधिक लोग कृषि पर आश्रित हैं जिन्हें अपनी आजीविका चलाने के लिए कृषक के रूप में या कृषक मजदूर के रूप में काम करना पड़ता है। इसलिए वे अपनी कृषि आय को बढ़ाने के लिए लगातार प्रयास करते रहते हैं। अपनी खाद्यान्न समस्या की पूर्ति हेतु लगातार सुधार करने के लिए वे प्रयत्नशील रहते हैं। बिहार की प्रमुख फसलों में धान, गेहूँ, मकई, जौ, चना, तम्बाकू, महुआ, ज्वार, दलहन हैं। इनके अलावे सब्जियाँ, फल, फूल की खेती यहाँ बड़े पैमाने पर की जाती है। तम्बाकू, अमरूद एवं लीची उत्पादन में तो बिहार का महत्वपूर्ण स्थान है। इस प्रकार विविध उपजाऊ मिट्टियाँ, श्रम की आसान उपलब्धता एवं मानसूनी जलवायु के कारण कृषि बिहार की अर्थव्यवस्था की रीढ है।

अथवा, http://www.bsebstudy.com

अथवा, भारत में निम्न प्रकार के नदी घाटी परियोजनाएँ हैं—

(i) भाखड़ा-नंगल परियोजना— यह सतलज नदी पर हिमालयी क्षेत्र में विश्व का सर्वोच्च बाँध है। इसकी ऊँचाई 225 मीटर है। नांगल स्थान पर एक और बाँध बनाकर नहर निाला गया है। इससे पंजाब के 14 लाख हेक्टेयर भूमि में सिंचाई की जाती है और 1204 मेगावाट जल विद्युत उत्पादन किया जाता है। इस परियोजना का लाभ पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली को मिलता है।

(ii) दामोदर घाटी परियोजना— यह परियोजना दामोदर नदी के भयंकर बाढ़ से झारखण्ड एवं पश्चिम बंगाल को बचाने के साथ-साथ तिलैया मैयन, कोनार पहाड़ी में बाँध बनाकर 1300 मेगावाट जल विद्युत उत्पन्न करने में सहायक है। इसका लाभ बिहार, झारखण्ड एवं पश्चिम बंगाल को प्राप्त होता है।

(iii) कोसी परियोजना— यह परियोजना कोसी नदी पर बनाई गई परियोजना है जो पूर्वी नेपाल से बहती हुई बिहार में गंगा नदी में मिल जाती है। समय-समय पर कोसी नदी उत्तर बिहार में भयानक बाढ़ लाती है। इस पर बाँध बनाकर 20000 किलो वाट बिजली का उत्पादन किया जाता है।

(iv) हीराकुंड परियोजना— मुटानदी पर उड़ीसा में विश्व का सबसे लम्बा बाँध बनाकर 2.7 लाख किलोवाट बिजली उत्पादन किया जाता है। उड़ीसा एवं आस पास के क्षेत्रों में कृषि एवं उद्योगों में इसका उपयोग किया जाता है तथा उसकी लम्बाई 4.8 km है जिससे 7.5 लाख हेक्टेयर में सिंचाई की जाती है।

(v) रिहन्द परियोजना— उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश की सीमा पर सोन नदी पर यह परियोजना स्थित है। कृत्रिम झील 'गोविन्द सागर बल्लभ पंत सागर' का निर्माण कर बिजली उत्पादित की जाती है।

(vi) तुंगभद्रा परियोजना— यह कृष्णा की सहायक नदी तुंगभद्रा पर कर्नाटक स्थित दक्षिण भारत की सबसे बड़ी नदी-घाटी परियोजना है जो कर्नाटक एवं आन्ध्र प्रदेशक` सहयोग से तैयार हुई है। इसमें बिजली की उत्पादन क्षमता एक लाख किलोवाट है।

GROUP–C राजनीति विज्ञान (अंक : 17)

16. (ख), **17.** (ख)।

18. लोकतंत्र का निर्माण देश की जनता के द्वारा किया जाता है। जनता के चुने प्रतिनिधि शासन में जब भाग लेते हैं तब वे अपने मतदाताओं की आर्थिक समस्याओं को समाप्त करने एवं

http://www.bsebstudy.com
http://www.bsebstudy.com

उनके बीच आर्थिक समृद्धि और विकास लाने के लिए बाध्य होते हैं। अन्यथा अगले चुनाव में वैसे प्रतिनिधियों को अपने मतदाताओं के वोट मिलने के आसार नहीं नजर आते हैं। यही कारण है स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में जितनी भी पंचवर्षीय योजनाएँ बनाई गई, उनमें देश के लोगों की भूखमरी बेरोजगारी दूर करने और उद्योग, वैज्ञानिक शोध जैसे प्रगति मूलक कार्यों पर जोर दिया गया। स्वतंत्रता के समय पूरा देश खाद्यान्न के मामले में पूरी तरह विदेशी सहायता पर निर्भर था। लेकिन खाद्यान्न के मामले में पूरी तरह विदेशी सहायता पर निर्भर था। लेकिन खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ोतरी करने के लिए हरित क्रांति को देश में सफल बनाया गया। दुग्ध उत्पादन, दलहन उत्पादन, मत्स्य उत्पादन में वृद्धि के लिए इन दिशाओं में महत्वपूर्ण सुधार लाए गए। लोगों की आर्थिक समृद्धि बढ़ाने के लिए देश में अनेकों बड़े और मध्यम कोटि के कल कारखाने लगाए गए। हर हाथ को काम मिले के सिद्धांत से प्रभावित होकर कुटीर उद्योग को काफी विकसित किया गया। रोजगार के नए अवसर तलाश किए गए। व्यवसायिक शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा को उन्नत बनाकर भारत की प्रजातांत्रिक सरकार ने लोगों की आर्थिक समृद्धि में वृद्धि की है। इसलिए लोकतंत्र आर्थिक समृद्धि का महत्वपूर्ण आधार स्थल है।

19. लोकतंत्र का निर्माण देश की जनता के द्वारा किया जाता है। जनता के चुने प्रतिनिधि शासन में जब भाग लेते हैं तब वे अपने मतदाताओं की आर्थिक समस्याओं को समाप्त करने एवं उनके बीच आर्थिक समृद्धि और विकास लाने के लिए बाध्य होते हैं। अन्यथा अगले चुनाव में वैसे प्रतिनिधियों को अपने मतदाताओं के वोट मिलने के आसार नहीं नजर आते हैं। यही कारण है स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में जितनी भी पंचवर्षीय योजनाएँ बनाई गई, उनमें देश के लोगों की भूखमरी बेरोजगारी दूर करने और उद्योग, वैज्ञानिक शोध जैसे प्रगति मूलक कार्यों पर जोर दिया गया। स्वतंत्रता के समय पूरा देश खाद्यान्न के मामले में पूरी तरह विदेशी सहायता पर निर्भर था। लेकिन खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ोतरी करने के लिए हरित क्रांति को देश में सपुल बनाया गया। दुग्ध उत्पादन, दलहन उत्पादन, मत्स्य उत्पादन में वृद्धि के लिए इन दिशाओं में महत्वपूर्ण सुधार लाए गए। लोगों की आर्थिक समृद्धि बढ़ाने के लिए देश में अनेकों बड़े और मध्यम कोटि के कल कारखाने लगाए गए। हर हाथ को काम मिले के सिद्धांत से प्रभावित होकर कुटीर उद्योग को काफी विकसित किया गया। रोजगार के नए अवसर तलाश किए गए। व्यवसायिक शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा को उन्नत बनाकर भारत की प्रजातांत्रिक सरकार ने लोगों की आर्थिक समृद्धि में वृद्धि की है। इसलिए लोकतंत्र आर्थिक समृद्धि का महत्वपूर्ण आधार स्थल है।

अथवा, लोकतंत्र की सफलता राष्ट्र के लोगों के बीच आपसी सौहार्द्र समन्वय एवं सार्थक आपसी विचार विनिमय पर आधारित होता है। इस समन्वय और सौहाद्रता पर जब ठेस लगती है तो लोकतांत्रिक व्यवस्था टूटने लगती है। आतंकवाद और अलगाववाद लोकतांत्रिक व्यवस्था के मार्ग की है। भारत आज इन्हीं दोनों संकीर्णताओं से कुप्रभावित है। एक तरह देश की उत्तरी-पूर्वी सीमा पर आतंकवादी तत्वों की लगातार बढ़ोतरी हो रही है जिसके फलस्वरूप सदियों से एक साथ पड़ोस में रहकर जीवन जीने वाले विभिन्न धर्मों के लोग संशय, असुरक्षा के भाव से आक्रांत हैं। वही अलगाववाद की लगातार बढ़ती प्रवृत्ति ने राष्ट्र की एकता एवं अखंडता के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती ला खड़ी कर दी है। इन दोनों तरहों की बुराईयों के कुपरिणाम न केवल हिंसा विध्वंस एवं संपत्ति के का नाम ही हो रहा है बल्कि लोग राष्ट्रीय भावनाओं को भूलकर अपना एक नए अस्तित्व को बनाने के लिए सक्रिय हो रहे है फलतः राष्ट्र विभिन्न खंडों में बाँटने की स्थिति में आ रहा है।

आतंकवाद मूलतः धार्मिक, राजनीतिक एवं अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने के

http://www.bsebstudy.com
http://www.bsebstudy.com

लिए किया गया हिंसक प्रयास होता है। जिसक फलस्वरूप समाज क लागों की सृजनशीलता के भाव तिरोहित होने लगने लगती है। क्योंकि सरकार की लोककल्याणकारी शक्ति को भी अलगाववाद की शक्ति को शमन करने में लगाया जाता है। ऐसी स्थिति में कमजोर इच्छावाली लोकतांत्रिक सरकार कभी-कभी इन अराजक तत्वों के सामने इनकी गलत मांगों को मान कर घुटने टेक देती है। यह समर्पण न तो लोकतंत्र के लिए हितकारी होता है और न शेष लोगों में लोकतंत्र के प्रति अकाट्य निष्ठा ही पनपा पाता है।

20. लोगों के उप समूह को राजनीतिक दल कहा जाता है जो अपने राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए देश की राजनैतिक क्रिया-कलापों में सक्रिय रूप से भाग लेता है एवं राष्ट्र की राजनैतिक क्रिया-कलापों से जुड़कर राजनीति को एक नया आयाम देना चाहता है। ऐसे राजनीतिक दल के मुख्य कार्य मतदान करना, चुनाव लड़ना, नीतियाँ एवं राजनीतिक कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लेना, आदि हैं।

21. सत्ता में साझेदारी के कई आधार हैं—क्षेत्र, भाषा, संस्कृति, संप्रदाय, धर्म, विचारधारा आदि। इसमें विभिन्न विचारधाराओं वाले दल एवं विभिन्न सामाजिक समूहों के प्रतिनिधि और विभिन्न हितों के लिए कार्य करने वाले दल शामिल होते हैं।

स्वतंत्रता के बाद केंद्रीय सत्ता में कांग्रेस पार्टी अपनी उपस्थिति बनाए रही। प्रांतीय सरकारों में भी कांग्रेस का वर्चस्व बना रहा। और वे एक विचारधारा के पोषक के यप में बने रहे। फलत: सामाजिक समूहों की साझेदारी सत्ता में बढ़ गई, राज्य सरकारों की स्वायत्तता को सम्मान तथा उनके हिस्से को सामूहिक स्वीकृति मिलनी शुरू हो गई।

GROUP–D अर्थशास्त्र (अंक : 17)

22. (ग), 23. (क)

24. सहकारिता का अर्थ है, मिल-जुलकर कार्य करना। जब ऐसे कार्यों का उद्देश्य आर्थिक हो जाता है तो यह अर्थशास्त्र की सहकारिता होती है। अर्थ यह कि एक संगठन जिसके अंतर्गत दो या अधिक व्यक्ति मिल-जुलकर स्वेच्छापूर्वक आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु कार्य करते हैं, सहकारिता कहलाती है।

25. भारत में वैश्वीकरण के पक्ष में निम्नलिखित तर्क दिये जा सकते हैं।

(क) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को प्रोत्साहन— वैश्वीकरण से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ावा मिलने से भारत जैसे विकासशील राष्ट्र को पूंजी की प्राप्ति हो जाएगी।

(ख) प्रतियोगी शक्ति में वृद्धि— वैश्वीकरण की नीति के कारण भारत प्रतियोगी शक्ति में वृद्धि कर अपनी अर्थव्यवस्था में त्वरित विकास करेगा।

(ग) नई प्रौद्योगिकी की प्राप्ति— भारत जैसे विकासशील देश को नई प्रौद्योगिकी की प्राप्ति हो सकेगी तथा विकास की गति तीव्र हो सकेगी।

(घ) अच्छी उपभोक्ता वस्तुओं की प्राप्ति— भारतीयों को विभिन्न प्रकार की अच्छी-अच्छी गुणवत्ता वाली वस्तुएँ प्राप्त हो सकेंगी; वह भी सापेक्षत: कम कीमत पर।

(ङ) नये बाजार तक पहुँच— भारत के उत्पादों की पहुँच वैश्वीकरण के।

(च) उत्पादन तथा उत्पादित वस्तु को उन्नत कर सकना— वैश्वीकरण के कारण उपलब्ध ज्ञान से उत्पादन तथा उत्पादित वस्तु के स्तर को उन्नत करने में मदद हो सकेगी तथा उत्पादन अंतर्राष्ट्रीय स्तर को छू सकेगा। इसके अतिरिक्त बैंकिंग तथा वित्तीय क्षेत्र में सुधार एवं मानवीय पूंजी की क्षमता का विकास हो पाएगा।

http://www.bsebstudy.com
http://www.bsebstudy.com

25. अथवा, भारतीय संदर्भ में मानवाधिकार आयोग एक संवैधानिक संस्था जब सरकार अपने द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों को गैर-सरकारी संस्थाओं के सहयोग से लोगों तक पहुँचाने का काम करती है अथवा लोग स्वयं अपने प्रयास से ऐसी सेवाओं के सृजन से लाभान्वित होते हैं तो उसे गैर-सरकारी सेवा के अंतर्गत रखा जाता है। इस क्षेत्र के भी कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—ब्यूटी पार्लर, दूरसंचार सेवाएँ, बैंकिंग सेवाएँ, स्वरोजगार सेवाएँ, बस सेवा, विमान सेवा इत्यादि। इनमें से कुछ सेवाएँ ऐसी हैं जो सरकारी एवं गैर-सरकारी दोनों ही स्तर पर चलाई जाती हैं। ख़ासकर यातायात सेवाएँ, शिक्षा सेवाएँ, स्वास्थ्य सेवाएँ, दूरसंचार सेवाएँ, बैंकिंग सेवाएँ इत्यादि का क्षेत्र इतना व्यापक है कि सरकार अकेले सक्षम नहीं है।

26. निजीकरण एवं उदारीकरण को वैश्विक स्तर पर मिली स्वीकृति ने वैश्वीकरण की प्रवृत्ति को बल दिया तथा वैश्वीकरण की स्थिति आज बन गयी। वैश्वीकरण के फलस्वरूप पूंजी, वस्तु, नई प्रौद्योगिकी तकनीक तथा लोगों के विचारों का स्वतंत्र प्रवाह होने लगा। इनके स्वतंत्र प्रवाह का लाभ आम लोगों को मिलने लगा। बहुविध वस्तुएँ मिलने लगीं। कई विकल्प आज लोगों के समक्ष हैं, उन्हें मात्र चयन करने की जरूरत है।

27. आर्थिक विकास आर्थिक नियोजन का परिणाम है। प्रो. मेयर एवं बाल्डविन ने कहा कि आर्थिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा दीर्घकाल में किसी अर्थव्यवस्था की वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है। प्रो. रोस्टोव ने कहा कि आर्थिक विकास एक ओर श्रम शक्ति में वृद्धि की दर तथा दूसरी ओर जनसंख्या वृद्धि के बीच स्थापित संबंध है।

इस प्रकार आर्थिक विकास एक परिवर्तन एवं बदलाव की प्रक्रिया है जो अर्थव्यवस्था के ढाँचे को बदल डालती है। परिणामत: प्रति व्यक्ति आय बदल जाती है तथा आर्थिक विकास के निर्धारक बदल जाते हैं।

साहित्यिक दृष्टि से विकास एवं वृद्धि में कोई फर्क नहीं है। अर्थशास्त्र विकास एवं वृद्धि में फर्क करता है। अर्थशास्त्री हिक्स एवं डॉ ब्राईट सिंह ने वृद्धि शब्द का प्रयोग आर्थिक दृष्टि से विकसित राष्ट्रों के संबंध में किया है। मैड्डीसन ने भी धनी राष्ट्रों के संदर्भ में आर्थिक वृद्धि तथा विभिन्न राष्ट्रों के लिए विकास शब्द के प्रयोग की बात की।

GROUP–E आपदा प्रबन्धन (अंक : 6)

28. (ख), **29.** (घ)।

30. भूकंप भूस्थलीय वह प्राकृतिक विध्वंस है जिसके द्वारा विकास की सारी संरचनाएँ कुछ ही पलों में ध्वस्त हो जाती हैं। इसलिए खासकर भूकंप प्रभावित क्षेत्र में कुछ महत्वपूर्ण उपाय किया जाना आवश्यक है—

1. मकान की नींव को मजबूत एवं भूकंप अवरोधी होना चाहिए।
2. लंबी दीवारों को मजबूती से टिकाए रखने के लिए कंक्रीट एवं ईंटों से बने खंभे का निर्माण होना चाहिए।
3. भवन निर्माण के पहले उस स्थल की मिट्टी की जाँच मिट्टी विशेषज्ञ वैज्ञानिकों से करवाकर एक गहरी नींव वाला भवन का निर्माण किया जाना चाहिए।
4. भवनों का निर्माण हल्के लेकिन मजबूत अवयवों (पदार्थों) से किया जाना चाहिए ताकि भवन ध्वस्त होने की स्थिति में जान माल का खतरा कम हो।

●●●

http://www.bsebstudy.com
http://www.bsebstudy.com